



Pune News

## मुसलमानों में परिवार नियोजन पिछले कुछ वर्षों में बढ़ा है: एसवाई कुरैशी



Bonnerjee Debina • 12 जुलाई 2022 • 0 • 7 • 2 minutes read

भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एसवाई कुरैशी ने कहा कि मुस्लिमों में परिवार नियोजन पिछले कुछ वर्षों में बढ़ा है।

विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर सोमवार को गोखले इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिटिक्स एंड इकोनॉमिक्स (जीआईपीई) में एक व्याख्यान देते हुए कुरैशी ने कहा, "परिवार नियोजन का अभ्यास नहीं करने वाले मुस्लिम परिवार 55 फीसदी से घटकर 45 फीसदी हो गए हैं। यहां तक कि 45 फीसदी हिंदू परिवार भी परिवार नियोजन नहीं करते हैं। विभिन्न मापदंडों पर, आंकड़े बताते हैं कि मुस्लिम आबादी हिंदू आबादी से आगे नहीं बढ़ रही है।"

"यह एक मिथक है कि 'इस्लाम परिवार नियोजन के खिलाफ है'। धार्मिक शास्त्रों में कहीं भी परिवार नियोजन वर्जित नहीं है। परिवार नियोजन के पक्ष और विपक्ष दोनों में धार्मिक ग्रंथें

Manage consent

व्याख्या है। व्याख्याओं द्वारा नसबंदी की मनाही है, लेकिन जन्म के अंतराल की न केवल अनुमति है, बल्कि प्रोत्साहित भी किया जाता है, "कुरैशी ने कहा।

कार्यक्रम के दौरान "जाति जनगणना के महत्व" पर एक पैनल चर्चा भी हुई।

जनसांख्यिकीय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के पूर्व प्रोफेसर पीएम कुलकर्णी ने कहा कि बड़े मुद्दों को समझने के लिए जाति जनगणना महत्वपूर्ण है।

"जाति आधारित जनगणना महत्वपूर्ण हैं। पिछड़े वर्गों की पहचान के लिए नमूना सर्वेक्षण किया जा सकता है। हालांकि, कई नमूना सर्वेक्षण छोटे समुदायों को कवर नहीं कर सकते हैं। मंडल आयोग ने छोटे समुदायों को कवर करने के लिए सर्वेक्षणों की समीक्षा की सिफारिश की है। ग्रामीण से शहरी प्रवास होते हैं जिन्हें विभिन्न कारणों से ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में जाने के लिए संबद्धता वाली एक निश्चित जाति के रूप में देखा जा सकता है। पहले यह सफेदपोश प्रवास था। अब, अंतरराज्यीय प्रवास हो सकता है जो जाति के अनुसार चयनात्मक हो सकता है, लेकिन हम नहीं जानते। इसलिए, जाति जनगणना को शामिल करने की आवश्यकता है क्योंकि नमूना सर्वेक्षण पूरी तरह से मददगार नहीं हो सकते हैं," कुलकर्णी ने कहा।

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय (एसपीपीयू) में राजनीति विज्ञान विभाग की प्रोफेसर राजश्री देशपांडे ने एक अन्य पैनलिस्ट, राजश्री देशपांडे ने कहा कि जाति की जनगणना पूरी तरह से मदद नहीं करेगी, बल्कि जाति की जीवाश्म समझ को चुनौती देने के लिए कुछ हद तक ही मदद करेगी।

देशपांडे ने कहा, "जाति डेटा एकत्र करने से जाति की वास्तविकता अधिक पारदर्शी हो जाएगी।"

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज (आईआईपीएस) के माइग्रेशन एंड अर्बन स्टडीज विभाग के प्रमुख आरबी भगत ने कहा कि जाति एक पहचान बन गई है।

"हमें जाति की गतिशीलता को समझने की जरूरत है और इसलिए जाति जनगणना महत्वपूर्ण है। यह सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को समझने और मुद्दों को हल करने के लिए अधिक सटीक नीतियों का मसौदा तैयार करने में मदद करेगा," भगत ने कहा।

Source link

<https://www.hindustantimes.com/cities/pune-news/family-planning-among-muslims-has-increased-over-the-years-sy-quraishi-101657566764728.html>

Manage consent